International Indexed & Referred Research Journal, March, 2012. ISSN- 0975-3486, RNI-RAJBIL 2009/30097;VoL.III *ISSUE-30

शोध पत्र– हिन्दी

महाश्वेता देवी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

* नीलम देवी

* शोधार्थी दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (मद्रास)

March, 2012

सारांशः

व्यक्तियों के समूह को समाज कहा जाता है किसी भी समाज का निर्माण समस्त जीव व प्राणी मिलकर करते हैं, लेकिन मनुष्य सभी जीवों में श्रेष्ठ प्राणी है। इसीलिए अपनी श्रेष्ठता और बुद्धि तत्व की प्रधानता के कारण मानव समाज, अन्य प्राणियों की अपेक्षाकृत व्यवस्थित होता है। सामान्य रूप से "समाज से अभिप्राय जीवन की ऐसी अनवरत् एवं नियामक व्यवस्था से है जिसका निर्माण व्यक्ति पारस्परिक हित तथा सुरक्षा के निमित जाने–अनजाने में कर लेते हैं।"

छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा समाज के विषय में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करती है, "समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है जिन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थों की सार्वजनिक रक्षा के लिए अपने विषम आचरणों में साम्य उत्पन्न करने वाले कुछ सामान्य नियमों से शासित होने का समझौता कर लिया है ।" अर्थात् सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सामाजिक नियमों का पालन समाज के प्रत्येक सदस्य को करना पड़ता है ।

साहित्यकार महाश्वेता देवी जी ने सन् 1950 ई॰ के उत्तरार्द्ध में लेखन के क्षेत्र में पदार्पण किया। अपने लेखन की शुरूआत उन्होंने सन् 1956 में की। इनका प्रथम उपन्यास 'झांसी' (रानी) था। यह न केवल बांग्ला बल्कि हिन्दी साहित्य में भी प्रसिद्धि और शोहरत की हकदार बनी। कम लिखना किन्तु विशिष्ट लिखना उनके लेखकीय कर्म की मूल चेतना है। महाश्वेता देवी ने समाज के बहते हुए वातावरण को, समाज की विभिन्न परम्पराओं को अपनी लेखनी द्वारा अपनी रचनाओं में सजाने की कोशिश की ।

यह कोशिश निरर्थक नहीं थी । उनके लेखन का विशिष्ट क्षेत्र है– दलितों और साधनहीनों के हृदयहीन शोषण का चित्रण और इसी संदेश को वे बार–बार सही जगह पहुंचाना चाहती हैं – "सरकार गरीबी दूर करने में असमर्थ है। वह स्वयंसेवी संस्थाओं को पैसे दे रही है और यह सच है कि अधिकांश सार्थक काम करने वाली संस्थाओं के पीछे विदेशी पैसा है, जो देशी पैसे के साथ–साथ चल रहा है । पत्रकार जी, आप कुछ कहेंगे।"

महाश्वेता देवी का कहना है कि किसी वेश्या का जन्म नहीं होता । हर बच्चा, लड़का हो या लड़की एक कच्चे घड़े के समान होता है । जैसा चाहो बनाओ, जैसा रूप चाहो दे दो, अच्छा–बुरा तुम्हारे हाथ में है, वेश्याओं को भी एक अच्छा जीवन देने का विचार भी उनके मन में आया। अगर कोई आगे बढ़कर उसका हाथ थाम लेता है तो वह भी एक अच्छी जिंदगी जी सकती है। "अगर नेम कर्म हो गया, रीति धर्म के मुताबिक लड़की को बारह भतारी भी बना दिया गया, उसके बाद रजिस्टर में नाम भी चढ़ गया, तो खैरियत नहीं। जिंदगी भर मर्द उसकी बोटी–बोटी नोच खायेंगे, मरने के बाद, सरकार उसका यथासर्वस्व हड़प लेगी।" लेकिन सामाजिक चेतना के तहत इस जीवन से वेश्या जीवन उद्धार का एक मार्ग दिखाया कि वह किस प्रकार गृहस्थ जीवन में आ सकती है वह एक सुखी जीवन की अधिकारी है – "बलराम बाबू ने नानी से कहा – जिस दिन से आपकी बेटी को देखा है, मुझे लगा है, अगर वे मुझे मिल जाये तो उससे ब्याह करके, मैं समझूँगा, मुझे सब कुछ मिल गया ।"

महाश्वेता देवी ने 'प्रति 54 मिनट' उपन्यास में लिखा है कि इस देश में प्रति 54 मिनट पर एक स्त्री का बलात्कार किया जाता है उसमें विभिन्न सामाजिक शक्तियों की क्या भूमिका है? इस तथ्य पर रोशनी डाली गई है वह लिखती है – "एक दिन जी॰टी॰वी॰ पर मैंने एक प्रोग्राम देखा । उसमें एक गोल–मेज के चारों और कुछ पुरुष बैठे थे ।

बहस का विषय था – क्राइम ब्यूरो की सही रिपोर्ट । बैक ग्रांउडम्यूजिक के साथ पुरुष कंठों का व्यंग्य विद्रूप कानों में गूंज रहा था। बातचीत शुरू हुई है। किसने पूछा – जिस बहू की हत्या हुई, क्या उसका बलात्कार भी हुआ था? जिसका बलात्कार हुआ वह क्या अच्छे चरित्र की थी? इसी तरह की ओर भी अभद्रतापूर्ण बातें नारी–निर्यातन को लेकर की जाने लगी । निष्कर्ष यह था कि जो स्त्रियां अपनी घर–गृहस्थी में संतुष्ट न होकर बाहर निकलती हैं, उन्हें बलात्कार का शिकार होना पड़ता है। वे बाहर निकलती ही क्यों हैं? कारण एक ही है, उनका चरित्र ठीक नहीं है।"'अन्नपूर्णा स्त्री शिक्षालय' नामक आश्रम की स्थापना महाश्वेता जी ने की। इस आश्रम में तिरस्कृत, असहाय महिलाएं सिलाई, पिराई का कार्य करती थी जिससे वे अपने पांवों पर खड़ी हो सके।

महाश्वेता देवी युवा वर्ग तक अपनी बात पहुंचाना चाहती थी, भटके लोगों को रास्ता दिखाना उसका उद्देश्य था सामाजिक चेतना के लिए उन्होंने 'प्रति 54 मिनट' में लिखा है जो प्रशंसा के योग्य है, आई॰पी॰सी॰ 375 में महाश्वेता देवी ने महिला–शिशु सदन के विषय में लिखा है –"एक दिन प्रसूति–सदन आकर उतसी ने सरमा को बताया, 'मां' के नाम से जो महिला शिशु सदन मैंने शुरू किया है उसका उद्घाटन करने एम॰एल॰ए॰

माया घोष स्वयं आयेंगी । उन्होंने पूछा, तुम इसे चलाओगी कैसे? उन्होंने सुझाव दिया कि इसे समाज कल्याण को दे दो, इसे चलाने की जिम्मेदारी वे ले लेंगे। मैंने कहा, नहीं सोचा, मिशन को दे दिया जाये तो वे लोग यहां पर औरतों और बच्चों की चिकित्सा का काम अच्छी तरह करेंगे । यहा पर डॉक्टर बैठेगा तो गांव के दूसरे लोगों का भी उपकार होगा ।" अपनी सामाजिक चेतना में महाश्वेता देवी बंधुआ मजदूरी को पूर्णतया खत्म करवाना चाहती है "मुनावर ने बिना कोई भूमिका बांधे कहा, यह देवता तेरी बंधुआगिरी खलास कर रहा है तीन सौ रूपये देकर । तेरह साल पहले तूने तीन सौ रुपये लिये थे । ब्याज समेत वह अब कितना हो गया है, सुनकर तू क्या करेगा? मैं चाहता तो अब भी और तेरह साल तुझसे काम करवा लेता ।"

महाश्वेता देवी ने आदिवासी क्षेत्र में रखने वाले लोगों के जीवन को अपने 'दौलति' उपन्यास में उजागर किया है उनका कहना है कि इतना आपसी वैमनस्य जिस भी आदिवासी क्षेत्र में रहता है वह इलाका प्रगति नहीं कर सकता । वह किसी भी तरह की सुविधायें नहीं पा सकता– "भैया ! आदिवासी डी॰एस॰पी॰ सनातक सिंह के गुस्से की बलि होकर सस्पैंड हो गया है। मैं आदिवासी क्षेत्र का उप–प्रधान हूँ । मोची से जूते बनवाता हूँ और घिसता हूँ किंतु एक भी नलकूप, एक भी सिंचाई–कुंआ, एक भी स्कूल अपने क्षेत्र में ला सका?"

महाश्वेता देवी कहती है कि समाज में तलाक क्यों होते हैं? आपसी वैमनस्य, एक दूसरे से समझौता न होना । कभी–कभी पुरुष वर्ग का अत्याचार इतना बढ़ जाता है कि उसका अंत केवल तलाक ही रह जाता है – "दिल्ली में ही नीना तुम्हें छोड़कर चली आई थी, उसे तलाक वसूल करने में भी देर नहीं लगी । सुना था तुम दोनों के रिश्ते काफी कड़वे हो चुके थे । नीना के पिता खुद ही जाकर अपनी बेटी को ले आये थे। रिश्ते पुरलिंब सप्लाई करते थे। तुम अक्सर उन लोगों के साथ कैंप पर चल देते थे ।" आपसी वैमनस्य परिवार, देश और राष्ट्र की जड़ों को खोखला कर देता है ।

गांव में ऊँची–नीची जाति आपसी वैमनस्य का कारण बनती हैं, यही महाश्वेता देवी बताना चाहती है कि आज इसी निम्न वर्ग के नाम पर इतना पैसा मिलता है सरकार से कि उसी के सहारे हर गांव का कुछ न कुछ विकास होता रहता है ।

महाश्वेता देवी अपने लेखों द्वारा सामाजिक चेतना लाना चाहती है वह चाहे बंधुआ प्रथा हो, चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे स्त्री की दुर्दशा हो, हर सामाजिक क्षेत्र में विकास करना चाहती है । कलम किसी तलवार से कम नहीं वह मानव ह्रदय में चेतना भर देती है साधू, संन्यासी, नेता, समाज–सुधारक सभी आवाज उठाते हैं इसमें कितनी सफलता मिलती है यह आवाम पर निर्भर करता है। राजनीति और अपराध की मिलीभगत से हमारा समाज कितना विपन्न और कायर होता जा रहा है ।

व्यक्तियों तथा समूहों में नारी के साथ किये जाते दुराचार का प्रतिवाद भी सामने आ रहा है । लेकिन महाश्वेता देवी का विचार है कि सामाजिक चेतना लाने के लिये हर मानव को पग बढ़ाना होगा । एक से एक मिलकर ग्यारह का उदाहरण रखना होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1 नगेन्द्र, ग्रन्थावली, भाग–4, पृ॰ 227 2 महादेवी वर्मा, मेरे प्रिय निबन्ध, पृ॰ 108 3 महाश्वेता देवी, टेरोडैक्टिल, पृ॰ 103 4 महाश्वेता देवी, स्त्री पर्व, पृ॰ 124 5 महाश्वेता देवी, स्त्री पर्व, पृ॰ 131 6 महाश्वेता देवी, प्रति 54 मिनट, पृ॰ 6 7 महाश्वेता देवी, आई॰पी॰सी॰ 375, पृ॰ 120 8 महाश्वेता देवी, दौलति, पृ॰ 41 9 महाश्वेता देवी, दौलति, पृ॰ 132 10 महाश्वेता देवी, स्त्री पर्व, पृ॰ 55